और कोई न खोल सके, तीन सूरत का हाल।
फैल हाल दोऊ उमत के, तोको लिखिया नूरजमाल।।५२।।

इस कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को हुकम की तीन सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) की हकीकत, ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की करनी-रहनी की हकीकत मेरे बिना और कोई नहीं खोल सकेगा, ऐसा श्री राजजी महाराज ने कुरान में लिखा।

सुख देओ दोऊ उमत को, बीच बैठ नासूत।
चिन्हाए इस्क हक साहेबी, बुलाए ल्याओ लाहूत।।५३।।

उन्होंने मुझे यह भी हुकम किया कि मृत्युलोक में बैठकर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दोनों जमातों को सुख दो और हक की साहिबी और इश्क की पहचान कराकर उन्हें परमधाम बुला लाओ।

इन विध सुख केते कहूं, झूठी इन जुबान।
मेरी रूह जाने या मोमिन, या दिए जिन रेहेमान।।५४।।

इस तरह से कितने बेशुमार सुख दिए। इस झूठी जबान से कैसे कहूं? उन सुखों को मेरी आत्मा या मोमिन या देने वाले श्री राजजी महाराज जानते हैं।

दे आड़ो ब्रह्मांड सबन को, ढूंढ़ ढूंढ़ रहे सब दूर।
आगूं आए इलम दिया, जासों पोहोंची बका हजूर।।५५।।

बाकी सब के आगे ब्रह्मांड में तन का परदा लगा है। सब निराकार में ही ढूंढ़-ढूंढ़कर दूर हो गये। अब श्री राजजी महाराज ने खुद आकर जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान दिया जिससे अखण्ड घर (परमधाम) में श्री राजजी के सामने पहुंच सकी।

केती कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो रूहें देखो सहूर कर।
महामत कहे मेहेर अलेखे, जो देखो रूह की नजर।।५६।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी की मेहर का मैं कहां तक वर्णन करूं? उनकी मेहर बेशुमार है। यदि आत्मा की नजर से विचार करके देखो तो उनकी मेहर का वर्णन हो ही नहीं सकता।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ३९८ ।।

निसबत का प्रकरण

देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आंखां खोल।
तैं तेरे कानों सुने, हक बका के बोल।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! तू अपनी आंख खोलकर अपने सम्बन्ध को पहचान। तूने श्री राजजी महाराज के वचनों को श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) के द्वारा स्वयं अपने कानों से सुना है।

कौन जिमी में तूं खड़ी, कहां है तेरा वतन।
कौन खसम तेरी रूह का, कौन असल तेरा तन।।२।।

तू कौन सी जमीन पर यहां खड़ी है, तेरा घर कहां है, तेरी आत्मा का पति कौन है और तेरी परआतम कहां है?

Nijanand App

कौन मिलावा तेरा असल, तूं बिछुरी क्यों कर।
तो तोहे याद न आवहीं, जो तैं सुन्या नहीं दिल धर।। ३ ।।

तेरी परआतम कहां मिलकर बैठी है और तू वहां से कैसे बिछुड़ी? तूने इन सब बातों को ध्यान से नहीं सुना, तभी तुझे याद नहीं आ रहे हैं।

सहूर तोको साहेब दिया, इलम दिया हक।
बाहेर माहें अंतर, एक जरा न रही सक।। ४ ।।

तुझे श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि दी और तारतम ज्ञान दिया जिससे भीतर, बाहर और आत्मा के सभी संशय मिट गए।

चौदे तबकों में नहीं, रूह-अल्ला का इलम।
ए दिया एक तोही को, करके मेहेर खसम।। ५ ।।

रूह अल्लाह श्यामा महारानीजी का तारतम ज्ञान चौदह लोकों में नहीं है। श्री राजजी महाराज ने मेहर करके यह तुझे ही दिया है।

मूल मिलावा चीन्ह्या, चीन्ह्या बिछुरे वास्ते जिन।
बेसक हुई इन बातों, जो हक बका का बातन।। ६ ।।

अब इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मूल-मिलावे में बैठी अपनी परआतम को पहचान लिया है। जिस वास्ते वहां से बिछुड़ कर आए हैं, वह भी जान लिया। इन सब बातों से सब संशय मिट गए और श्री राजजी महाराज के छिपे रहस्य मालूम हो गए।

दुनियां में अर्स कहावहीं, ताए सब जानें हक।
ए इलम तिनको नहीं, जो तैं पाया बेसक।। ७ ।।

दुनियां वालों का अर्श बैकुण्ठ कहलाता है। उसे सब अखण्ड (सच्चा) जानते हैं। यह जागृत बुद्धि का ज्ञान दुनियां वालों के पास नहीं है। इसे श्री राजजी महाराज ने तुझे दिया है।

त्रैगुन सिफत कर कर गए, ए जो खावंद जिमी आसमान।
खोज खोज खाली गए, माहें थके ला मकान।। ८ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश जो इस जमीन-आसमान के मालिक हैं, वह सब पारब्रह्म की महिमा गाते हैं, परन्तु उस पारब्रह्म को खोज-खोजकर भी नहीं पा सके। निराकार में ही फंसकर रह गए।

मलकूत साहेब फरिस्ते, हक ढूंढ़या चहूं ओर।
रहे बेचून बेसबीय में, ना पाया बका ठौर।। ९ ।।

बैकुण्ठ के मालिक भगवान विष्णु व अन्य फरिश्तों ने पारब्रह्म को सब जगह ढूंढ़ा, परन्तु शून्य निराकार से आगे जाकर अखण्ड का पता न पा सके।

ए नूर बका किने न पाइया, कर कर गए सिफत।
ए सुध नूर बका को नहीं, जो तैं पाई न्यामत।। १० ।।

इस अखण्ड घर परमधाम को कोई नहीं पा सका। कईयों ने बड़ी महिमा गाई। उस घर की सुध अक्षर ब्रह्म को भी नहीं। जो यह न्यामत तुझे मिल गई है।

Nijanand App

नूर बका इत दायम, आवे हक के दीदार।
तले झरोखे झांकत, आए उलंघ जोए के पार।। ११ ।।

अक्षरधाम भी अखण्ड है जहां से अक्षर ब्रह्म यहां नित्य अक्षरातीत श्री राजजी के दर्शन करने आते हैं और तीसरी भोम में विराजे श्री राजजी महाराज के दर्शन नीचे चांदनी चौक से ही करते हैं। फिर जमुनाजी के पार अपने घर अक्षरधाम में चले जाते हैं।

नूर-जमाल के दीदार को, आवें नूर-जलाल।
नूर-जमाल के अर्स में, इत रूहें रहें कमाल।। १२ ।।

नूर-जमाल (श्री राजजी महाराज) के दर्शन को नूर-जलाल (अक्षर ब्रह्म) आते हैं। नूर-जमाल के घर (परमधाम) में शोभा युक्त रूहें रहती हैं।

इत मिलावा रूहन का, जो कही बारे हजार।
उतरे लैलत-कदर में, एह तीसरा तकरार।। १३ ।।

यहां बारह हजार आत्माएं मिलकर बैठी हैं। यह लैल-तुल-कदर के तीसरे तकरार में यहां इस संसार में आई हैं।

अर्स-अजीम तेरा वतन, खसम नूर-जमाल।
ए इलम पाया तैं बेसक, देख कौल फैल हाल।। १४ ।।

तेरा घर परमधाम है और तेरे धनी पारब्रह्म हैं। तारतम ज्ञान का तुझे बेशक इलम मिला है। अब तुम अपनी कहनी, करनी और रहनी को देखो।

देख मेहेर तूं हक की, खोल दई हकीकत।
देख इलम तूं बेसक, दई अपनी मारफत।। १५ ।।

तुम श्री राजजी महाराज की मेहर को देखो। उन्होंने सारे छिपे भेदों को खोल दिया। तू जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान पर विचार कर जिसने तुझे खुद की पहचान करा दी है।

जिन कारन तेरा आवना, हुआ जिमी इन।
रूह-अल्ला ने जो कही, सो मैं कहूं आगे मोमिन।। १६ ।।

जिस वास्ते तुझे इस संसार में आना पड़ा तथा जो रूह अल्लाह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने कहा है, वह अब मैं मोमिनों के आगे कहती हूं।

दायम करत रब्द, रूहें हादी हक।
सब कोई केहेते आपना, बड़ा है मेरा इस्क।। १७ ।।

परमधाम में श्री राजजी, श्यामाजी और रूहों में सदा इश्क रब्द होता था और सब कोई अपने ही इश्क को बड़ा बताते थे।

बीच अर्स खिलवत में, होत दायम विवाद।
इस्क अपना रूहें हक को, फेर फेर देती याद।। १८ ।।

परमधाम की खिलवत में सदा ही यह प्रेम विवाद होता था और आत्माएं अपना इश्क बड़ा होने की याद दिलाती थीं।

Nijanand App

तब कह्या हकें हादी रूहन को, मैं तुमारा आसिक।
ए तेहेकीक तुम जानियो, इस्क मेरा बुजरक।। १९ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानी और रूहों को कहा कि मैं तुम्हारा आशिक हूं और तुम यह निश्चित समझ लो कि इश्क मेरा बड़ा है।

तब हादी रूहन को, ए दिल उपजी सक।
हक का इस्क हमसे बड़ा, ए क्यों होवे मुतलक।। २० ।।

तब श्री श्यामाजी और रूहों को अपने मन में संशय पैदा हुआ कि श्री राजजी का इश्क हमसे बड़ा कैसे हो सकता है?

हकें कह्या रब्द मैं ना करूं, कर देखाऊं तुमको।
इस्क मेरा तब देखो, नेक न्यारे हो मुझ सों।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि मैं विवाद नहीं करता। करके दिखाऊंगा। मेरे इश्क की पहचान तब होगी जब मुझसे थोड़ा अलग हो जाओगी।

न्यारे तो हम होएं नहीं, निमख न छोड़ें कदम।
ए जेती अरवाहें अर्स की, कदम तले सब हम।। २२ ।।

रूहों ने कहा हम अलग तो नहीं होंगे और आपके चरणों से एक पल के लिए भी जुदा नहीं होंगे। हम जितनी भी रूहें हैं, अब आपके चरणों के तले ही बैठी हैं।

जुदे होए हम ना सकें, अव्वल तो तुमसों।
हादी रूहन में जुदागी, कोई होए ना सके हममों।। २३ ।।

अव्वल तो हम आपसे अलग हो ही नहीं सकते और रूहों में और श्यामाजी में किसी तरह भी जुदाई नहीं हो सकती।

खेल देखाऊं मैं जुदागी, कदम तले बैठो मिल।
ऐसा खेल फरामोस का, जानों जुदे हुए सब दिल।। २४ ।।

श्री राजजी कहते हैं मैं जुदाई का खेल दिखाता हूं। तुम सब मिलकर मेरे चरणों के तले बैठो। यह फरामोशी का ऐसा खेल है जिसमें तुम्हें लगेगा कि तुम सब अलग हो गए।

हक कहे मेरी साहेबी, और मेरा इस्क।
हादी रूहों को अर्स में, ए सुध नहीं मुतलक।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि मेरी साहेबी और मेरे इश्क की, श्यामा महारानी और तुम रूहों को परमधाम में सुध नहीं है।

जो ए खबर होती तुमको, जैसी मेरी साहेबी बुजरक।
तो बड़ा कबूं न केहेतियां, अपने मुख इस्क।। २६ ।।

यदि यह खबर तुमको होती कि मेरी साहेबी कितनी महान है, तो तुम अपने मुख से अपने इश्क को बड़ा कभी नहीं कहतीं।

Nijanand App

अर्स न छूटे खिन एक, तो क्यों देखें मेरा इस्क।
तो क्यों पाइए इस्क बेवरा, आप अपने माफक।। २७ ।।

एक क्षण के लिए भी घर से तुम जुदा नहीं हो सकते तो मेरे इश्क को कैसे देखोगे और इश्क का ब्यौरा जैसा तुम कहते हो, कैसे होगा?

अर्स साहेबी जानी नहीं, तो ना देख्या हक इस्क।
तो रूहों हक सों कह्या, इस्क अपना बुजरक।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज की परमधाम की साहेबी को नहीं जाना था, इसलिए उनके इश्क की पहचान नहीं हुई, इसलिए रूहों ने श्री राजजी से अपना इश्क बड़ा कहा।

ना कछू जानी साहेबी, ना जान्या इस्क असल।
तो बुजरक इस्क अपना, रब्द किया सबों मिल।। २९ ।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज की साहेबी को जाना नहीं था और न उनके इश्क को पहचाना था, इसलिए सभी ने अपना इश्क बड़ा समझकर प्रेम रब्द किया।

दायम बातें इस्क की, करत माहों-माहें प्यार।
खेलते हंसते रमते, करत बारंबार।। ३० ।।

इस तरह से इश्क की बातें आपस में प्यार के साथ हमेशा ही होती थीं। खेलते, हंसते हमेशा एक यही बात होती थी।

एक इस्क दूजी साहेबी, रूहों देखलावना जरूर।
तो हमेसा अर्स में, होता एह मजकूर।। ३१ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने मन में विचार लिया कि एक तो परमधाम का इश्क और दूसरी अपनी साहेबी रूहों को अवश्य दिखाना है, इसलिए परमधाम में सदा ही यही बात होती थी।

ए बात हकें करनी, सुध देने सबन।
इस्क और पातसाही की, खबर न थी रूहन।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज ने सभी को सुध देने के वास्ते यह काम करना था, क्योंकि रूहों को परमधाम के इश्क और हुकूमत (बादशाही) की खबर नहीं थी।

बहुत बातें हैं हक की, बीच अर्स खिलवत।
इन जुबां केती कहूं, हिसाब बिना न्यामत।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज की परमधाम में बहुत सी बातें है। इस जबान से मैं कहां तक कहूं? यह बेहिसाब हैं।

एक साहेबी हक की, और इस्क हक का।
ए दोऊ कोई न चीन्हैं, बीच अर्स बका।। ३४ ।।

एक श्री राजजी महाराज की साहेबी दूसरा उनका इश्क। इन दोनों को अखण्ड परमधाम में कोई नहीं जानता था।

एक जरा कोई वाहेदत का, ना सके जुदा होए।
तोलों न चीन्हें कोई हक की, इस्क साहेबी दोए।। ३५ ।।

परमधाम से कोई अलग नहीं हो सकता और तब तक श्री राजजी महाराज की साहेबी और इश्क की पहचान नहीं हो सकती।

Nijanand App

अर्स से जुदे होए के, ए देखे जो कोए।
इस्क साहेबी हक की, बुजरक देखे सोए।। ३६ ।।

घर (परमधाम) से अलग होकर यदि कोई देखे तो हक की साहेबी और हक का इश्क दोनों ही बड़े हैं।

ए देखाओ अपनी साहेबी, और कैसा इस्क है तुम।
राजी करो देखाए के, हम बैठें पकड़ कदम।। ३७ ।।

रूहों ने कहा, हे श्री राजजी महाराज! अपनी साहेबी दिखाओ। तुम्हारा इश्क कैसा है, जरा दिखाकर हमें राजी करो। हम आपके चरण पकड़े बैठे हैं।

जोलों जुदे होए नहीं, हक बका अर्स सों।
तोलों नजरों न आवहीं, अर्स सुख खिलवत मों।। ३८ ।।

अब श्री राजजी महाराज कहते हैं कि जब तक हमसे और घर परमधाम से तुम अलग नहीं होते, तब तक तुम्हें अर्श में सुख कैसे हैं, का पता नहीं लगेगा।

ए अनहोनी क्यों होवहीं, झूठ न आवे बका माहें।
और रूहें बका की झूठ को, सो कबूं देखें नाहें।। ३९ ।।

परमधाम में झूठ नहीं आ सकता। परमधाम की रूहें झूठ को कभी देख नहीं सकतीं। ऐसी अनहोनी कैसे हो सकती है?

जरा एक अर्स-अजीम का, उड़ावे चौदे तबक।
तो रूह बका क्यों देखहीं, झूठा खेल मुतलक।। ४० ।।

परमधाम का एक कण चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को उड़ा देता है, तो फिर अखण्ड घर की रूहें इस झूठे खेल को कैसे देखेंगी?

अनहोनी ए हकें करी, करके ऐसी फिकर।
परदे में झूठ देखाइया, बीच कायम बका नजर।। ४१ ।।

यह ऐसी अनहोनी बात श्री राजजी महाराज ने विचार करके दी और अखण्ड परमधाम में ही नजर के सामने बिठाकर परदे में संसार का खेल दिखाया।

मेहेर पूरी मेहेबूब की, बड़ीरूह रूहों ऊपर।
इस्क साहेबी अर्स की, खेल देखाया और नजर।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज की पूरी कृपा श्यामा महारानी और रूहों पर है। इन्होंने इन झूठे तनों में हमारी सुरता (आत्मा) बैठाकर परमधाम का इश्क और साहेबी दिखाई।

हकें नेक करी महंमद सों, सब मेयराज में मजकूर।
सो वास्ते रूहों के साहेदी, सो रूह अल्ला करी जहूर।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज ने मेयराज (दर्शन) के समय रसूल साहब से थोड़ी-सी हकीकत बताई थी। यह सब रूहों को गवाही मिल जाए इस वास्ते कहा था। उसी बात को रूह अल्लाह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने आकर जाहिर किया।

Nijanand App

महामत कहे मेहेर मोमिनों, हकें करी वास्ते तुम।
कौन देवे इत सुख बका, बिना इन खसम।।४४।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे वास्ते यह मेहर की है। धनी के बिना ऐसे खेल में अखण्ड सुख और कौन दे सकता है?

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ४४२ ॥

कलस पंच रोसनी का

रे रूह करे ना कछू अपनी, के तूं उरझी उमत माहें।
उमर गई गुन सिफत में, तोहे अजूं इस्क आया नाहें।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! तू कब तक सुन्दरसाथ के वास्ते उलझी रहेगी? जगाने में लगी रहेगी? कुछ अपने लिए भी कर। तेरी आयु श्री राजजी महाराज के गुण और महिमा गाते-गाते बीत रही है फिर भी तुझे अभी तक इश्क नहीं आया।

हक सिर पर इन विध खड़े, देखत ना हक तरफ।
जो स्वाद लगे मेहेबूब का, तो मुख ना निकसे एक हरफ।।२।।

श्री राजजी महाराज किस तरह से तेरे ऊपर मेहरबानी कर रहे हैं, फिर भी तू उनकी तरफ नहीं देख रही है। यदि तुझे लाड़ले मेहबूब का सच्चा स्वाद मिल जाए, तो तेरी जबान से एक शब्द भी बाहर नहीं निकलेगा।

बात करत तूं हक की, जो रूहों सों गुफ्तगोए।
इन बका की खिलवत से, कछू तोको भी नसीहत होए।।३।।

श्री राजजी महाराज की बातें जो तू रूहों को बता रही है, इन अखण्ड घर की बातों से कुछ तू भी तो नसीहत ले ले।

ए सब्द कहे तैं नींद में, के सुपने करत स्वाल।
के जवाब तेरे जागते, कछू देखे ना अपना हाल।।४।।

यह वाणी तू नींद में कह रही है या सपने में प्रश्न कर रही है या जागृत अवस्था में जवाब दे रही है? तू अपना हाल क्यों नहीं देखती?

कैसी बात करत है, किन ठौर की बात।
तूं कौन गुफ्तगोए किन की, ना विचारत हक जात।।५।।

यह तू कैसी बात और कहां की बात करती है? तू कौन है और तू किसकी बात करती है? तेरी इस बात पर मोमिन (श्री राजजी महाराज के निसबती) विचार क्यों नहीं करते?

ए बात ना होए कबूं नींद में, और सुपने भी ना एह।
जो तूं बात करे जागते, तो तेरी क्यों रहे झूठी देह।।६।।

यह घर की बातें नींद और सपने में नहीं होतीं। यदि तू जागृत अवस्था में बात कर रही है, तो तेरा झूठा तन नहीं रहना चाहिए।

Nijanand App